काव्य के प्रकार

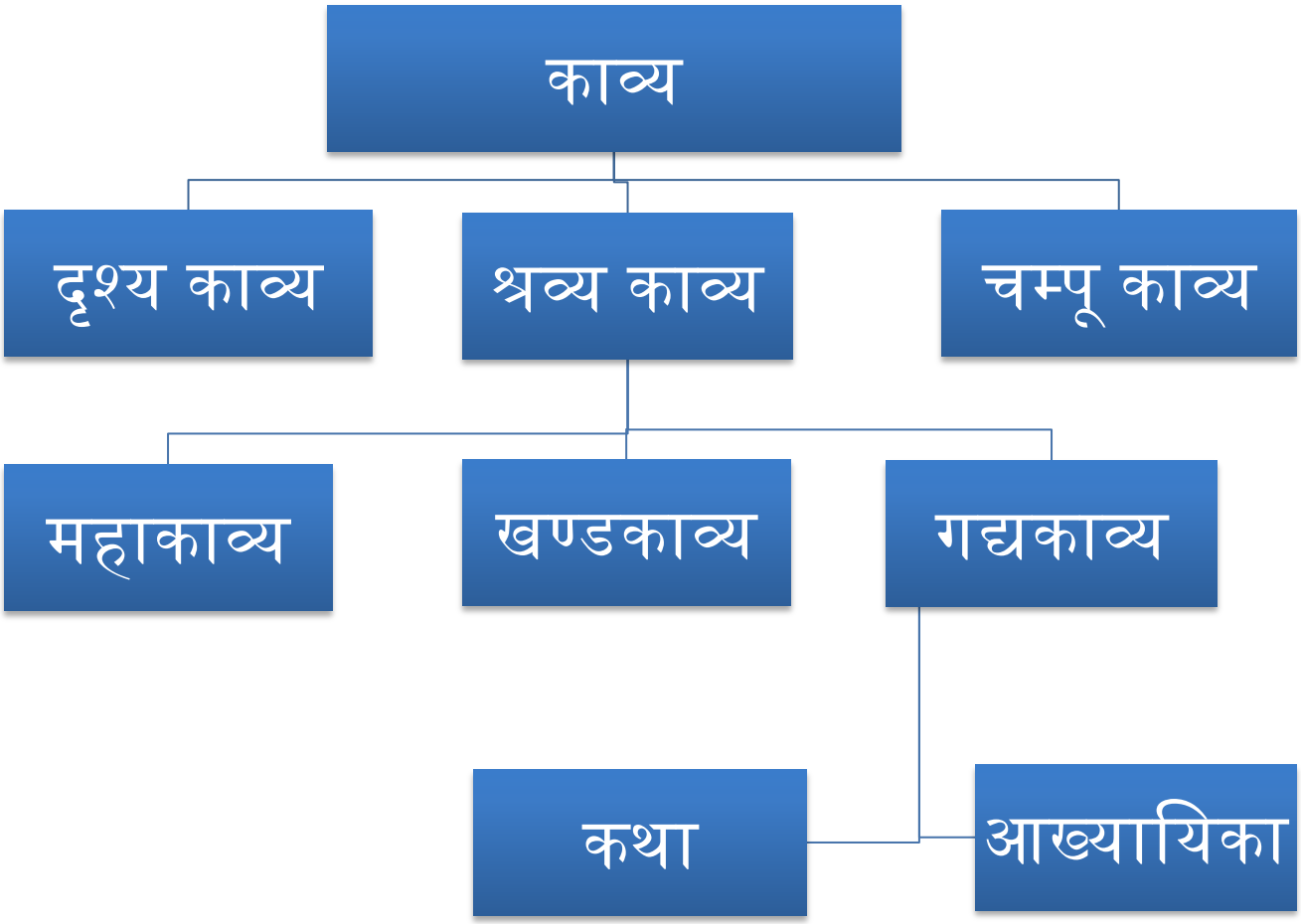

गद्यकाव्य

वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तं वृत्तगन्धि च ।

भवेदुत्कलिकाप्रायं चूर्णकं च चतुर्विधम् ॥

आद्यं समासरहितं वृत्तभागयुक्तं परम् ।

अन्यद् दीर्घसमासाढ्यं तुर्यं चाल्पसमासकम् ॥

अर्थात् छन्दहीन रचना गद्य है । यह चार प्रकार का होता है- मुक्तक(समासरहित), वृत्तगन्धि(पद्य के कुछ अंश), उत्कलिकाप्राय(दीर्घ समास) और चूर्णक(छोटे समास) ।

मुक्तक समासरहित रचना होती है । लेखक अत्यन्त सरल एवं सहज शब्दों में ऐसी रचना करता है । ऐसी रचनाएं अत्यन्त सहज रूप से बोधगम्य होती हैं । वृतगन्धि में छन्द से युक्त पद वाक्य के मध्य में होते हैं जहां पर छन्द का अंश जुड़ा माना जाता है । उत्कलिका में लम्बे-लम्बे समासयुक्त वाक्य होते हैं । चूर्णक प्रकार के गद्य में छोटे-छोटे समासयुक्त वाक्य होते हैं । गद्य काव्य मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है- कथा और आख्यायिका ।

कथा

कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम् ।

क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके

आदौ पद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्तनम् ।

कथा में सरस कथावस्तु गद्यों द्वारा ही बनाई जाती है । कहीं कहीं आर्या छन्द और कहीं वक्त्र या उपवक्त्र छन्द होते हैं । प्रारम्भ में पद्यमय नमस्कार और खलादिकों का चरित्र निबद्ध होता है । आचार्य विश्वनाथ 'कथा' की कोई स्पष्ट परिभाषा नही देते हैं ।

आख्यायिका

आख्यायिका कथावत्स्यात्कवेर्वंशानुकिर्तनम् ।

अस्यामन्यकवीनां च वृत्तं पद्यं क्वचित्क्वचित् ॥

कथांशानां व्यवच्छेद आश्वास इति बाध्यते ।

आर्यावक्त्रापवक्त्राणां छन्दसा येन केनचित् ॥

अन्यापदेशेनाश्वासमुखे भाव्यर्थसूचनम् ।

'आख्यायिका' कथा के समान होती है । इसमें कवि के वंश का वर्णन होता है । अन्य कवियों के वृतान्त तथा पद्य भी कहीं-कहीं होते हैं । इसके कथाभागों

का नाम आश्वास होता है । आर्या, वक्त्र, उपवक्त्र छन्दों के द्वारा अन्योक्ति से आश्वास के आरम्भ में अगली कथा की सूचना दी जाती है। 'आख्यायिका' का भी विशेष लक्षण नही है।

'आख्यायिका' की रचना संस्कृत भाषा एवं गद्य शैली में होती है । इसका कथानक उदात्त होता है, उच्छ्वासों में विभाजन होता है। नायक अपना वृतान्त स्वयं कहता है।

महाकवि बाणभट्ट प्रणीत **'कादम्बरी'** कथा का और **'हर्षचरित्र'** आख्यायिका का सर्वोत्तम उदाहरण है।

जैनाचार्य हेमचन्द्र के अनुसार कथा और आख्यायिक के अतिरिक्त गद्यकाव्य के अन्य प्रकार भी माने जाते हैं- आख्यान, निदर्शन, प्रवह्लिका, मतल्लिका, मणिकुल्या, परिकथा, खण्डकथा, सकलकथा, उपकथा तथा बृहत्कथा।